जिसमें

SEr = मानक सहसम्बन्ध गुणांक त्रुटि
r = सह सम्बन्ध गुणांक

(B) निष्कर्षात्मक त्रुटियाँ
(Inferential Errors)

कभी-२ मूल्यांकन कर्ता मापन मापन परिणामों की सांख्यिकी गणनाओं — केन्द्रीय प्रवृत्ति मानों, विचलन मानों एवं सह सम्बन्ध गुणांक आदि की सहायता से मापन परिणामों की व्याख्या सही ढंग से नहीं कर पाते जिससे निष्कर्ष नहीं निकाल जा पाते। इस प्रकार की सांख्यिकीय त्रुटियों को निष्कर्षात्मक त्रुटियाँ कहते हैं। इस त्रुटि को दूर करने के लिए मूल्यांकन कर्ताओं को सांख्यिकीय गणनाएँ करने एवं उनका अर्थापन करने की क्रिया में दक्ष करना आवश्यक होता है।

कुशल मूल्यांकनकर्ता की विशेषताएँ।

"Quality of a Competent Evaluator"

शिक्षा के किसी भी क्षेत्र में मूल्यांकन किया जाए तो मूल्यांकन कर्ता को दो क्रियाएँ करनी होती हैं —

(1) मापन
(2) मापन से प्राप्त सूचनाओं अथवा आँकड़ों की व्याख्या

मापन क्रिया के चार अंग होते हैं — (1) एक मापीय व्यक्ति, वस्तु, क्रिया (2) मापीय गुण (चर), (3) प्रौसत मापन उपकरण अथवा विधि और चौथा (4) मापनकर्ता।

मूल्यांकन क्रिया के दो अंग — (1) एक मापन के आधार (मानदंड) और (2) दूसरा मूल्यांकन के आधार।

अतः इन क्रियाओं का मे दक्ष होना आवश्यक है और इस दृष्टि से उसे अधोलिखित गुण होने चाहिए

(1) उस व्यक्ति, वस्तु अथवा क्रिया को सामान्य स्थिति में लाने की कुशलता जिसमें किसी गुण (चर) का मापन होता है।

(2) मूल्यांकन परिणाम के आधार पर सुझाव देने की क्षमता

(3) दिए गए सुझावों के परिणामों को परखने की कुशलता।

(4) सुझाव देने में निरन्तरता बनाए रखने की क्षमता।

(5) मापन परिणामों की व्याख्या करने के मानदण्ड एवं विधियों का ज्ञान एवं उनके प्रयोग कुशलता।

(6) मापन उपकरणों एवं विधियों का ज्ञान, उपयुक्त मापन विधि के चयन एवं उसके प्रयोग कुशलता।

(7)

मूल्यांकन के चरण

1- उद्देश्यों का निर्धारण एवं परिभाषीकरण। (Identifying and defining objectives)

बालक की सामाजिक स्थिति, विषय वस्तु (Contents) की प्रकृति तथा शैक्षिक स्तर को ध्यान में रखकर उद्देश्य को निर्धारित करना चाहिए। व्यवहार परिवर्तन के रूप में उद्देश्य को सफल रूप से तभी निर्धारित किया जा सकता है जब उपर्युक्त तथ्यों को भली प्रकार समझ लिया जाए। तब मूल्यांकनकर्ता को यह स्पष्ट रूप में ज्ञान होना चाहिए कि व्यवहार परिवर्तन किस रूप में और किस सीमा तक लाना है। इससे यह जानने में सरलता होगी कि व्यवहार में वांछित परिवर्तन आया है या नहीं। अतः उद्देश्यों के भली प्रकार पहचान लेने और निर्धारित कर लेने पर ही मूल्यांकन की ओर अग्रसर होना चाहिए। उद्देश्यों को परिभाषित करने में विषय वस्तु और व्यवहार परिवर्तन दोनों को ही समान रूप से महत्वपूर्ण मानना आवश्यक है।

(2) अधिगम अनुभव की योजना बनाना
(Planning the learning experiences)

Scanned with CamScanner

सब बार उद्देश्यों को पहचान लेने और उनका निर्धारित कर देने के बाद अधिगम-अनुभव की ओर ध्यान देना चाहिए। अधिगम अनुभव से तात्पर्य एक परिस्थिति का निर्माण करना है। जिसके द्वारा बालक क्रिया कर सके अर्थात वह उद्देश्यों के अनुरूप प्रतिक्रिया व व्यवहार कर सके।

एक उद्देश्य की पूर्ति के लिए अनेक अनुभवों की योजना तैयार करनी पड़ती है। योजना निर्माण के समय बालक की आयु, लिंग, पारिवारिक सामाजिक पृष्ठभूमि आदि प्रासंगिक घटकों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए इन्हीं के आधार पर शिक्षण विधि साधन व माध्यम की व्यवस्था की जानी चाहिए।

③ विभिन्न उपकरणों के माध्यमों से साक्ष्य प्रदान करना।

"Providing evidence through various tools of evaluation"

उद्देश्य एवं अधिगम अनुभव की योजना तैयार हो जाने पर मूल्यांकन को साक्ष्य एकत्रित करना है। इन साक्ष्यों के आधार पर (data) (evidence) व्यवहार परिवर्तन का मूल्यांकन करना चाहिए।

④ व्यवहार परिवर्तन के क्षेत्र।

(Area of Change in Behaviour)

बालक में शिक्षण से आने वाले व्यवहार परिवर्तन, मूल्यांकन के फलस्वरूप ही होते हैं। मूल्यांकन इन व्यवहारिक परिवर्तनों के लिए एक माध्यम का कार्य करता है। व्यवहार परिवर्तन को तीन भागों में बांटा जाता है —

① ज्ञानात्मक पक्ष। Congnitive aspect

② भावात्मक पक्ष। Affective aspect

③ क्रियात्मक पक्ष। (Creative aspect)

① ज्ञानात्मक पक्ष (Cognitive aspect)

यह पक्ष ज्ञान के उद्देश्य पर महत्व देता है। जो ज्ञानात्मक पक्ष की ओर ले जाता है। जिसे प्रकार B.S Bloom ने ज्ञान को इस पक्ष में रखा जाता है।

1. विशिष्ट तथ्यों का ज्ञान
2. विशिष्ट तथ्यों को प्राप्त करने की विधियों का ज्ञान
3. मान्यताओं एवं परम्पराओं का ज्ञान
4. मापदण्डों का ज्ञान
5. सिद्धान्तों और सामान्यीकरण का ज्ञान
6. घटनाओं का ज्ञान
7. विधियों और प्रणालियों का ज्ञान।

इस पक्ष के भी है (6) स्तर होते हैं —

1 – प्रत्यास्मरण
2 – अभिज्ञान
(इन दोनों को ज्ञान)
3 – बोध
4 – प्रयोग
5 – विश्लेषण
6 – संश्लेषण
मूल्यांकन

भावात्मक पक्ष (Affective aspect)

1 – ग्रहण करना (Receiving)
2 – प्रतिक्रिया करना (Reaction)
3 – अनुमूल्यन
4 – विचारणा
5 – व्यवस्थापन
6 – चारित्रीकरण

क्रियात्मक पक्ष (Practical aspect)

यह पक्ष कौशल, मनोभावों एवं आंगिक गतिविधियों आवश्यकता से सम्बन्धित होता है इसे शिक्षण प्रक्रिया की दृष्टि से इस तरह लिखते हैं —

1. उत्तेजना
2. क्रियान्वयन
3. नियन्त्रण
4. स्वाभाविकता
5. समायोजन
6. कौशल

निष्कर्ष: व्यवहार के इन तीनों पक्षों में परस्पर समन्वय रहता है। बालक के व्यवहार का मूल्यांकन इन तीनों पक्षों के सामूहिक रूप में या अलग-2 किया जाता है।

Scanned with CamScanner

(रचनावादी उपागम में आकलन की विवेचना

रचनावादी उपागम में आकलन के निम्नांकित उद्देश्य होते हैं।

I- रचनावाद के प्रत्यय को समझाना

II- आकलन पर रचनावाद सिद्धान्त का आरोपण

III - परम्परागत आकलन और आकलन के रचनावाद के मध्य अन्तर खोजना

IV - आकलन को सम्पादन में भ्रान्तियों की व्याख्या करना।

रचनावाद और आकलन (Constructivism & Assessment)

रचनावाद से सम्बन्धित साहित्य में तीन कन्सट्रक्टस प्राप्त होते हैं। तथा अधिगम पर्यावरण के लिए निहितार्थ प्राप्त होते हैं वे हैं—

1. अधिगम एक क्रियाशील प्रक्रिया
2. सीखने वाले (छात्र में कुछ पूर्व ज्ञान होता है
3. सीखने वाला अपने अधिगम का स्वयं उत्तरदायित्व लेता है।

अत तीनो विचारो की द्वारा निम्न विवरण के केन्द्र बिन्दु हैं। इन विचारों की संक्रियात्मकता निम्न रचना द्वारा की जा सकती है।

1- आकलन में पूछताछ शामिल होती है।
2- आकलन में ज्ञान और समझ का आरोपण सम्मिलित है क्योंकि
3 - आकलन में तत्वमीमांसा के विस्तार का प्रयोग होता है।
4- अधिगम की प्रक्रिया आकलन की अवधि में स्थगित नहीं होती।
5. छात्र आरोपण के द्वारा ज्ञान का प्रदर्शन करते हैं।
6. - आरोपण मूल्यांकन विश्लेषण और संश्लेषण आदि

विभिन्न प्रकार के कार्यो का वर्णन करे ⟹

Discuss the different kinds of tasks"

असाइनमेन्ट (Assignment) ⟹

School As-